भारतीय रंगमंच पर प्रथम विश्वयुद्ध के प्रभाव

1914 ई० में प्रथम विश्वयुद्ध का महा विस्फोट हुआ। इस प्रलयकारी युद्ध में एक ओर से ब्रिटेन तथा अमेरिका तथा दूसरी ओर जर्मनी तथा इटली के नेतृत्व में हुआ। सारा विश्व महायुद्ध की विकराल ज्वाला में वर्षों तक जलता रहा। 1918 ई० तक युद्ध चलता रहा।

महायुद्ध के शुरू होते ही भारतीय राजनीति में नव जीवन एवं उत्साह का संचार हुआ। ब्रिटेन को युद्ध में फँसा देख क्रांतिकारी तथा शासन विरोधी आतंकवादी तुरन्त सजग हो गये। उन्होंने ब्रिटेन की लाचारी तथा विवशता से फायदा उठाना चाहा। 1914 ई० में लाला हरदयाल ने यहीं जाकर गदर पार्टी की स्थापना की। पुनः जर्मनी जाकर उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय दल का संगठन किया। इस संगठन में तारकनाथ दास, चम्पक रमन, पिल्लै आदि ने देश भक्ति का परिचय दिया। युद्ध शुरू होने के पूर्व दो हजार भारतीय क्रांतिकारी अपने देश में क्रांति करने के उद्देश्य से भारत आ गए थे। उन्होंने बंगाल, पंजाब, दिल्ली और महाराष्ट्र की क्रांतिकारी समितियों के साथ सम्पर्क स्थापित किया। इन लोगों की योजना का पता ब्रिटिश सरकार को पहले ही चल गया। हजारों क्रांतिकारियों को नजरबन्द कर लिया गया और सैकड़ों को फाँसी या कालापानी की सजा दी गई। राजा महेन्द्र प्रताप भारत से जर्मनी गए और वहाँ उन्होंने 'आजाद हिन्द सरकार' की स्थापना की। युद्ध की समाप्ति के बाद भी विदेशों में भारतीय क्रांतिकारियों का कार्य जारी रहा। वे लुक छिपकर भारत में हथियार पहुँचाने की कोशिश करते थे जिससे भारत में सशस्त्र क्रांति हो सके। युद्धकालीन क्रांतिकारी नेताओं में रासबिहारी बोस, रवीन्द्रनाथ सान्याल, नरेन्द्र भट्टाचार्य, करतार सिंह और विष्णु पिंगले के नाम उल्लेखनीय हैं। ब्रिटिश सरकार की सचेतता तथा दमनकारी नीति के चलते भारतीय क्रांतिकारी अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सके।

युद्ध में भारतीयों द्वारा सहायता :- एक ओर क्रांतिकारी अंग्रेज सरकार की जड़ खोदने में तल्लीन थे और दूसरी ओर कांग्रेस के नरम दलीय नेता ब्रिटिश साम्राज्य को युद्ध में सहायता पहुँचा रहे थे। कांग्रेस ने युद्धकाल में मेल-मिलाप की नीति अपनाई और युद्ध में सरकार की भरपूर सहायता की

भारतीयों द्वारा युद्ध में सहयोग देने के कारण :- भारतीयों ने महायुद्ध में ब्रिटेन की भरपूर सहायता की जिसके निम्नलिखित कारण थे - (1) **लॉर्ड हार्डिंग की उदारवादी तथा प्रगतिशील नीति :-** तत्कालीन वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की सुधारवादी और प्रगतिवादी नीतियों ने ब्रिटिश शासन के विरोध में भारतीयों के असंतोष को अवश्य ही कुछ कम कर दिया। हार्डिंग ने भारतीयों के प्रति सहानुभूति दिखाई। 1911 में बंग-विभाजन को समाप्त कर दिया तथा भारतीयों की इच्छा के अनुसार भारत की राजधानी कलकत्ता की जगह दिल्ली बना दी गई। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय प्रवासियों के साथ किए जाने वाले अत्याचार का विरोध किया और यह आश्वासन दिया कि युद्ध के बाद

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

को कॉंग्रेस और लीग में समझौता हुआ उसे भारत के इतिहास ने सुनहरा दिन माना।

1916 का वर्ष भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में सुनहरा वर्ष माना जाता है। इसी वर्ष मुस्लिम-लीग तथा भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस और काँग्रेस के उदारवादियों तथा उग्रवादियों में मेल हुआ। इस मेल ने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को वास्तविक जनप्रतिनिधिक संस्था बना दिया जिसमें भारत के सभी वर्गों, जातियों और विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व हुआ और सबों ने मिलकर काँग्रेस के नेतृत्व में सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सशक्त राष्ट्रीय आन्दोलन चलाया।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी-के-कालेज, डुमराँव
दिनांक 02/07/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

भारतीयों को आत्म निर्णय का अधिकार दिया जाएगा।

(ii) ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की घोषणाएँ :- समय-समय पर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की उदारवादी घोषणाओं ने भी स्वशासन की आशा में बैठे भारतीयों को युद्ध में ब्रिटेन की सहायता के लिए प्रेरित किया। ब्रिटिश सरकार ने यह घोषणा की थी कि युद्ध निजी स्वार्थ के लिए नहीं लड़ा जा रहा है बल्कि दुनिया में लोकतंत्र की रक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय अन्याय द्वारा छोटी जातियों को कुचले जाने से बचाने तथा दुनिया के लोगों को आत्म निर्णय का अधिकार दिलाने के लिए लड़ा जा रहा है।

(iii) कांग्रेस पर उदारवादियों का नियंत्रण :- युद्धकाल में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर उदारवादियों का नियंत्रण था। ये उदारवादी नेता प्रारंभ से ही शांति तथा वैधानिक उपायों में विश्वास करते थे। सभी नेता लोकतंत्र में विश्वास करते थे और चूंकि अंग्रेजों ने यह घोषणा की थी कि इंग्लैण्ड विश्व में लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए विश्वयुद्ध में प्रवेश कर रहा है, अतः इन लोगों ने समझा कि युद्ध की समाप्ति के बाद भारत में स्वशासन की स्थापना होगी।

(iv) महात्मा गाँधी का प्रभाव :- महात्मा गाँधी के प्रभाव से भी अंग्रेजों को युद्ध में सहायता दी। महात्मा गाँधी मानवतावादी थे। चूंकि यह युद्ध मानवता के हित के लिए लड़ा जा रहा था इसलिए उन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया।

(v) स्वशासन प्राप्ति की आशा :- भारतीयों ने युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की। इसका कारण यह था कि उन्हें आशा हो गई थी कि युद्ध के बाद उत्तरदायी सरकार अथवा स्वशासन प्राप्त हो जाएगा। इस प्रकार युद्ध में नैतिक मूल्यों के अनुमोदन और आत्मनिर्णय के सिद्धान्त ने भारतीय जनमत को बहुत ही प्रभावित किया।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर युद्ध का प्रभाव :- प्रथम महायुद्ध का भारतीय आंदोलन पर कई प्रभाव पड़े।

(i) भारतीयों में नव-चेतना का संचार :- महात्मा गाँधी के विचारानुसार भारतीयों में नई आशा की लहर दौड़ पड़ी। भारतीय सैनिकों ने युद्ध में बहादुरी का परिचय दिया जिसका प्रभाव भारतीय जनता पर पड़ा। वह अपने देश को स्वतंत्र देखने के लिए उत्सुक हो उठी। मित्र राष्ट्रों ने घोषणा की कि वे लोकतंत्र की रक्षा तथा पराधीन राष्ट्रों को आत्मनिर्णय का अधिकार देने के लिए लड़ रहे हैं। इस घोषणा से भारतीयों को यह आशा बँध गई कि युद्ध के बाद भारत को स्वशासन का अधिकार मिल जाएगा।

(ii) युद्धकाल में भारतीयों की दुर्बल तथा पराधीन राष्ट्रों की दुर्दशा :- युद्धकाल में भारतीयों को दुर्बल तथा पराधीन राष्ट्रों की दुर्दशा देखने का अवसर मिला। उन्होंने स्वतंत्रता और स्वशासन के महत्व को समझा। अतः भारत भूमि को स्वतंत्र करने के लिए वे उत्कंठित हो उठे।

(iii) गृहशासन आन्दोलन :- गृहशासन आन्दोलन के लिए एक प्रकार की प्रेरणा भी युद्ध से ही मिली। आंदोलन के संचालक आशान्वित हो उठे थे कि ऐसे समय में आन्दोलन को सफलता मिलेगी।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA